bdkbl 7 ikfy] çkÑr vkSj viHkza'k

bdkbl dh :ijs[kk

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा

7.3 पालि

- 7.3.1 पालि भाषा में उपलब्ध साहित्य
- 7.3.2 पालि भाषा की विशेषताएँ

7.4 प्राकृत

- 7.4.1 प्राकृत की बोलियाँ
- 7.4.2 प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएँ

7.5 अपभ्रंश

- 7.5.1 अपभ्रंश साहित्य
- 7.5.2 अपभ्रंश भाषा की विशेषताएँ

7.6 आर्य भाषाओं का विकास क्रम

7.7 सारांश

7.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

7-0 mnns';

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के आधार पर आप :

- मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा के विकास के विभिन्न स्तरों को समझ सकेंगे।
- मध्यकालीन आर्य भाषा के विकास के विभिन्न स्तरों की प्रतिनिधि भाषा के रूपों, उनके नामों तथा समयावधि को बता सकेंगे।
- पालि की ध्वनिक, व्याकरणिक तथा शब्दावली के प्रमुख भेदक लक्षणों को बता सकेंगे।
- प्राकृत, उसकी कालावधि, उसके प्रमुख भेदोपभेद, उनके नाम तथा उनकी विशेषताएँ बता सकेंगे।
- मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा का प्राचीन भारतीय आर्य भाषा अर्थात् संस्कृत से अंतर बता सकेंगे।
- मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा का आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में विकास के प्रमुख अभिलक्षण बता सकेंगे।

7-1 çLrkouk

पिछली इकाई में आपने पढ़ा है कि भारतीय आर्य भाषा के विकास के दूसरे सोपान को मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा कहा जाता है, जिसका समय 500 ई.पू. से 1000 ई.

सन् तक–डेढ़ हजार वर्ष का माना जाता है। आशय यह कि 500ई.पू. के आसपास भारतीय आर्य भाषा का प्रथम रूप, वैदिक और लौकिक संस्कृत–पाणिनि के व्याकरण द्वारा इस प्रकार स्थिर हो गया था कि संस्कृत परवर्ती समय में मात्र शास्त्र, शिक्षा तथा साहित्य–सृजन की भाषा बनकर रह गई और बोलचाल की लोकभाषा के रूप में उसका प्रयोग क्रमशः सीमित होता गया। यह निश्चित है कि जब संस्कृत बोलचाल की जनभाषा थी, तब भी भारत में अनेक आर्य तथा आर्येतर बोलियाँ थीं। किंतु उनमें साहित्यिक भाषा के रूप में केवल संस्कृत ही प्रचलित थी। आपको ध्यान रखना चाहिए कि संस्कृत भाषा के साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हो जाने के साथ ही प्रारंभ से एक शिक्षा–व्यवस्था भी विकसित हो गई थी, जिसे सामान्यतः वैदिक या संस्कृत–शिक्षा व्यवस्था कहा जाता है। आर्य संस्कृति तथा संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ संस्कृत–शिक्षा व्यवस्था भी क्रमशः विकसित हुई जिसके परिणामस्वरूप संस्कृत भाषा एक अंतःक्षेत्रीय व्यवहार की मानक साहित्यिक भाषा के रूप में सर्वत्र स्थापित हो गई। पाणिनि के व्याकरण के आधार पर संस्कृत का जो मानकीकरण हुआ, उसके कारण वह साहित्य और शास्त्र के सृजन और अध्ययन–अध्यापन की माध्यम भाषा के रूप में एक स्थायी भाषा या अमर भाषा के रूप में सिद्ध तो हुई; किंतु इसी प्रक्रिया के कारण वह बोलचाल की जनभाषा के रूप में बहुत दिनों बनी नहीं रह सकी।

विद्वानों की मान्यता है 500 ई.पू. से 200 ई.पू. के बीच क्रमशः लोकभाषा के रूप में संस्कृत का प्रयोग समाप्त होता गया, किंतु साहित्यिक भाषा के रूप में संस्कृत का प्रयोग निरंतर चलता रहा और बढ़ता रहा। इसी का परिणाम है कि परवर्ती युगों में संस्कृत भाषा का स्वरूप तो कुछ–कुछ बदला तथा उसके प्रयोग और प्रकार्य के क्षेत्र भी बदले, किंतु संस्कृत एक साहित्यिक–शास्त्रीय भाषा के रूप में स्थायी भाषा बन गई और उसी रूप में वह आज भी जीवित है। उसमें आज भी विविध प्रकार का साहित्य सृजन हो रहा है तथा वह सम्पूर्ण प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय ज्ञान–विज्ञान के अध्ययन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है।

7-2 e/;dkyhu Hkkjrh; vk;l Hkk"kk

आपने पहले पढ़ा है कि ईसा पूर्व 500 तक प्राचीन आर्य भाषा का समय था। इस युग की प्रमुख भाषा संस्कृत थी, जो वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत नाम के दो रूपों में विद्यमान थी। संस्कृत भाषा का जन–भाषा के रूप में लगभग ईसा पूर्व 500 तक प्रचलन समाप्त हो गया था। यह भाषा साहित्यिक भाषा के रूप में तथा ज्ञान–विज्ञान की भाषा के रूप में पूरे भारत में प्रचलित रही और आधुनिक युग तक भारत में संस्कृत भाषा के माध्यम से लेखन की परंपरा बनी रही। लेकिन संस्कृत भाषा संभवतः ईसा पूर्व 500 के बाद से साहित्यिक भाषा के रूप में प्रचलित है परंतु पूरी जन भाषा के रूप में संस्कृत के स्थान पर उसके परिवर्तित या विकसित रूपों का प्रचलन शुरू हुआ।

ईसा पूर्व 500 से लेकर ईसवी 1000 तक के समय को भारतीय भाषाओं के संदर्भ में मध्य युग कहा जाता है। इस युग में पालि, प्राकृत आदि भाषाएँ जन–भाषा या बोलचाल के रूप में अस्तित्व में आईं। यह भी यहाँ उल्लेख करना चाहिए कि प्राचीन संस्कृत साहित्य में विशेषकर नाटकों में कुछ पात्रों के मुँह से प्राकृत आदि भाषाओं के संवाद शामिल किए गए थे। इसका आधार यह था कि संस्कृत उच्च वर्ग के शिक्षित व्यक्तियों की भाषा थी और प्राकृत आदि जन–सामान्य की भाषा थी। इसलिए संस्कृत नाटकों में निम्नवर्ग के व्यक्तियों की भाषा के रूप में प्राकृत का दिखाई पड़ना यही सिद्ध करता है कि मध्यकाल में आम जन–भाषा प्राकृत थी।

e/;dky dk oxhZdj.k % अंग्रेज़ी के भाषा–वैज्ञानिकों ने मध्यकाल की सभी भाषाओं को ''प्राकृत भाषाएँ'' नाम दिया था। इसलिए उन्होंने निम्न प्रकार का वर्गीकरण प्रस्तुत किया :

1) प्रथम प्राकृत ¼500 b-i- l 1 b- rd½

2) द्वितीय प्राकृत ¼1 b- l 500 b- rd½

3) तृतीय प्राकृत ¼500 b- l 1000 b- rd½

इन विद्वानों ने जिसे प्रथम प्राकृत कहा, वह वास्तव में पालि भाषा है; जिसे तृतीय प्राकृत कहा वह कई अपभ्रंश भाषाएँ हैं। भाषाओं के इस ऐतिहासिक क्रम को ठीक से समझने के लिए यहाँ हम उपर्युक्त वर्गीकरण को निम्न प्रकार से आगे प्रस्तुत करेंगे :

1) पालि भाषा ¼500 b-i- l 1 b- rd½

2) प्राकृत भाषा ¼1 b- l 500 b- rd½

3) अपभ्रंश भाषा ¼500 b- l 1000 b- rd½

7-3 ikfy

ईसा पूर्व 500 से लेकर 1 ई. तक के युग में जो भाषा बोलचाल की भाषा रही उसे हम पालि भाषा कहते हैं। पालि शब्द का वास्तव में क्या अर्थ है यह मतभेद का विषय है। वास्तव में इस भाषा के लिए पालि शब्द का प्रयोग शुरू में किया ही नहीं गया था। इस भाषा का नाम संभवतः मागधी भाषा रहा है। पालि शब्द का प्रयोग बुद्ध के वचन के अर्थ में मिलता है क्योंकि महात्मा बुद्ध के वचन इसी भाषा में मिलते हैं। इस शब्द को कुछ विद्वानों 'पालना' धातु से भी जोड़ते हैं क्योंकि बुद्ध के वचन इस में सुरक्षित रखे गए हैं। और भी कई विद्वानों ने अलग–अलग प्रकार की उत्पत्तियाँ दीं जो इस अर्थ को स्पष्ट करें। हम यहाँ इसके अर्थ की अधिक विवेचना नहीं करेंगे, सिर्फ ये ही कहना चाहेंगे कि भाषा के रूप में पालि शब्द बाद में अपनाया गया था।

पालि किस जगह की भाषा है इसके बारे में भी विद्वानों में मतभेद हैं क्योंकि भगवान बुद्ध मगध के थे। यह सोचना स्वाभाविक है कि यह भाषा मगध की रही होगी। लेकिन अगर संस्कृत भाषा के स्थान पर यह भाषा बोलचाल की भाषा बनी तो इसकी संभावना है कि यह और सब जगहों में भी व्यवहार में आती रही होगी। इसलिए कई विद्वान इसका स्थान भिन्न–भिन्न रूप से मानते हैं। पालि भाषा के विभिन्न रूप भी नहीं मिलते हैं, जिसके कारण इसके स्थान के बारे में निर्णय करने में कठिनाई होती है। इसके बहुत से रूप मिलते तो उनके संदर्भ में हम इसके क्षेत्र के बारे में कुछ अंदाज कर सकते थे।

7-3-1 ikfy Hkk"kk esa miyC/k lkfgR;

पालि भाषा में प्रमुखतः दो प्रकार का साहित्य मिलता है:

1) त्रिपिटक : सुत्त, विनय और अभिधम्म

2) अनुपिटक : जातक, मिलिंद पन्हो, अट्ठकथा, महावंश आदि।

बौद्ध धर्म का प्राचीनम रूप त्रिपिटकों में मिलता है। त्रिपिटकों के लिए जो नाम ऊपर लिखे गए हैं वे वास्तव में सुप्त, विनय और अभिधर्म का बिगड़ा हुआ रूप है। ये तीनों ग्रंथ बौद्घ धर्म के आधार ग्रंथ हैं। यह भाषा वैदिक संस्कृत के काफी निकट है।

इसलिए कुछ विद्वान त्रिपिटकों की भाषा को सीधे वैदिक संस्कृत से प्राप्त रूप मानते हैं। अर्थात् इसका संबंध सीधे वैदिक संस्कृत से है और यह लौकिक संस्कृत (परवर्ती संस्कृत) का आगे का विकास क्रम नहीं है। इसीलिए विद्वानों में यह भी मत है कि संस्कृत से पालि और पालि से प्राकृत का सीधा क्रम नहीं है, बल्कि एक तरफ वैदिक संस्कृत से पालि का विकास क्रम चलता रहा और दूसरी तरफ लौकिक संस्कृत से प्राकृत का एक अलग क्रम बना।

बौद्ध वचनों के अलावा पालि भाषा के प्रयोग के बारे में जानने का एक और स्रोत है सम्राट अशोक के शिलालेखों की भाषा। इसे अशोक के अभिलेखों की भाषा भी कहा जाता है। सम्राट अशोक ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जनता को धर्म की सूचना देने के लिए और शासन की आज्ञाएँ देने के लिए शिलालेखों पर इस भाषा का प्रयोग किया।

इन शिलालेखों का समय ई. पू. तीसरी–दूसरी शताब्दी माना जा सकता है। चूँकि ये शिलालेख स्थानीय बोलियों के आधार पर लिखे गए थे, हमें इस भाषा के तीन अलग रूप मिलते हैं – पूर्वी, पश्चिमी और पश्चिमी उत्तरी। इससे अनुमान कर सकते हैं कि इस समय बोलचाल के स्तर पर पालि के अलग–अलग रूप रहे होंगे।

ई.पू. की दो–तीन शताब्दियों में अन्य प्रकार के शिलालेख या ताम्रपात्र भी मिलते हैं और कुछ गुफाओं की दीवारों पर खुदे लेख भी मिलते हैं। इनमें भी उस समय की पालि भाषा के स्वरूप का परिचय मिलता है।

7-3-2 ikfy Hkk"kk dh fo'k"krk,¡

यहाँ हम पालि की सामान्य विशेषताओं की चर्चा करेंगे।

/ofu Loj%

i) पालि में संस्कृत की कई ध्वनियों में परिवर्तन आया। /ऋ/ का उच्चारण खत्म हो गया।

जैसे नृत्य → निच्च, तृण → तिण, वृद्ध → बुड्ढो।

/ऐ/ तथा /औ/ के स्थान पर /ए/ तथा /ओ/ का परिवर्तन हुआ।

शैल → सेल चौर → चोर

/श, ष/ के स्थान पर /स/ का उच्चारण परिवर्तन हुआ।

नाशयति → नासेति, निषण्ण → निसन्न

विसर्ग का स्थान स्वर /ओ/ ने ले लिया।

वृद्धः → बुड्ढो देवः → देवो

कई भिन्न व्यंजनों के गुच्छों में समीकरण हुआ। अर्थात् दो भिन्न व्यंजनों के गुच्छ एक ध्वनि के द्वित्व हो गये।

अग्नि → अग्गि धर्म → धम्म

कई गुच्छों में ध्वनियाँ बदल गयीं।

दृष्ट → दिट्ठो सत्य → सच्च

सर्व → सब्ब मार्ग → मग्ग

ii) ध्वनि परिवर्तन के कारण पालि में संस्कृत के धातु रूप बदल गये। पालि के धातुओं में आप हिंदी क्रिया शब्द के रूप पहचान सकते हैं।

म्लायति → मिलायति	पृच्छति → पुच्छति (पूछना)
बुध्यते → बुज्झति (बूझना)	भवति → होति (होना)

0;kdjf.kd Lrj

व्याकरण में हम मुख्यतः संज्ञा और क्रिया रूपों की चर्चा करेंगे।

lKk 'kCn

i) संस्कृत में तीन लिंग और तीन वचन थे। इस तरह हर संज्ञा शब्द के आठ कारकों में 24 रूप बनते थे। पालि में द्विवचन समाप्त हो गया। इस तरह केवल 16 रूप बन सकते थे। पालि में संज्ञा रूप निम्न प्रकार थेः

''धम्म'' शब्द (धर्म)

	,d opu	cgqopu
कर्ता	धम्मो	धम्मा
कर्म	धम्मं	धम्मे
करण	धम्मेन	धम्मेहि
अपादान	धम्मा/धम्मस्मा	धम्मेहि
संप्रदान/संबंध	धम्मस्स	धम्मानं
अधिकरण	धम्मे	धम्मेसु
संबोधन	धम्म	धम्मा

ii) संस्कृत की अपेक्षा पालि सरलता की ओर बढ़ी। संस्कृत में अलग–अलग शब्दों के अलग–अलग ''संबंध कारक'' शब्द बनते थे।

जैसे–

देवः → देवस्य	अग्निः → अग्नेः
गुरूः → गुरोः	भिक्षुः → भिक्ष्वे

लेकिन पालि में सभी शब्दों के संबंध कारक /स्स/ से बनने लगे। जैसे देवस्स, अग्गिस्स, गुरूस्स, भिक्खुस्स। एक जैसे रूप के प्रयोग की इस विशेषता को सादृश्य (analogy) पर आधारित परिवर्तन कह सकते हैं। पालि में सादृश्य के कारण संबंध कारक रूप सरल हो गये।

fØ;k lajpuk

i) पालि में द्विवचन क्रियाएँ नहीं हैं। इस तरह क्रिया रूप एक तिहाई कम हो गये। आत्मनेपद का लगभग लोप हो गया और वे क्रियाएँ परस्मैपद की तरह बनने लगीं।

lLÑr ¼vkReusin½	ikfy
लभते	लभति
क्रमते	कमति
क्षमते	खमति

लकारों में लृट् और लेट् खत्म हो गये। इस तरह संस्कृत में जहां एक धातु के 540 क्रिया रूप बनते थे, पालि में 240 रूप ही रह गये।

ii) क्रिया रचना मूलतः संस्कृत के ही समान है। जैसे संस्कृत /तिष्ठ/ का ध्वनि परिवर्तन से रूप /तिट्ठ/ बना। शेष रचना संस्कृत के ही अनुसार रही –

	,dopu	cgqopu
प्रथम पुरूष	तिट्ठति	तिट्ठंति
मध्यम पुरूष	तिट्ठसि	तिट्ठथ
उत्तम पुरूष	तिट्ठामि	तिट्ठाव

¼uksV½ विसर्ग के लोप का ध्यान रखें।)

cks/k ç'u 1

1) बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत हैं।

   i) कुछ उपनिषद् पालि भाषा में लिखे गये थे।

   ii) बुद्घ वचन प्रमुख रूप में पालि में मिलते हैं।

   iii) संस्कृत और पालि की संज्ञा रूपावली में कोई अंतर नहीं है।

   iv) पालि की ध्वनि व्यवस्था संस्कृत के समान है।

   v) पालि में संस्कृत की आत्मेनपदी क्रियाएँ लगभग समाप्त हो गयीं।

2) दिये गये शब्दों में से उचित शब्द से वाक्य पूरे करें।

   i) पालि में सभी संबंध कारक शब्दों में स्स का प्रयोग .... का उदाहरण है। (समीकरण/सादृश्य)

   ii) .... में परिवर्तन के कारण पालि के क्रिया रूप दो तिहाई रह गये (लिंग/वचन)

   iii) पालि भाषा का प्रयोग............................... में भी दिखाई पड़ता है। (अशोक के शिलालेखों/प्रारंभिक पुराणों)

   vi) संरचना की दृष्टि से पालि................................... के अधिक निकट है। (संस्कृत/हिंदी)

   v) पालि में अनेक .... नहीं मिलते। (काव्य ग्रंथ/स्थानीय रूप)

7-4 çkÑr

मध्यकालीन आर्य भाषा के मध्ययुग में प्राकृत वह भाषा है जो प्रकृति के अनुरूप है अर्थात् जो सहज है, जन जीवन में व्याप्त है। हमने ऊपर उल्लेख किया था कि पालि मुख्यतः धर्म की भाषा है। लेकिन इस युग की प्राकृत भाषाएँ साहित्य के लेखन के लिए प्रयोग में आईं, इसीलिए प्राकृत भाषाओं को लोग साहित्यिक प्राकृत भी कहते हैं।

पहली शताब्दी में अश्वघोष ने संस्कृत भाषा में कई नाटक लिखे जिनमें प्राकृत भाषा का उपयोग हुआ। उनकी प्राकृत पालि के कुछ निकट है और उसमें संस्कृत का भी प्रभाव दिखाई पड़ा। दूसरी शताब्दी में धम्मपद्य नामक ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखा गया। यह संस्कृत शब्द धर्म पद का प्राकृत रूप है। यह धार्मिक ग्रंथ है। इस भाषा में गाथा साहित्य का लेखन हुआ और अट्ठकथा आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गए।

7-4-1 çkÑr dh ckfy;k

पालि में हमें कुछ भेद मिलते हैं, लेकिन प्राकृत के समय तक प्राकृत के कई क्षेत्रीय रूप भी मिलते हैं। इसी कारण हम इन्हें बहुवचन में प्राकृत भाषाएँ कहते हैं। भाषा वैज्ञानिकों ने प्राकृत भाषाओं के कई स्थानीय प्रयोग ढूँढे हैं। इनमें पाँच भेद प्रमुख माने जाते हैं, ये हैं – 1) शौरसेनी, 2) पैशाची 3) महाराष्ट्री 4) अर्धमागधी 5) मागधी।

1½ ***'kkSjlsuh ¾*** ऐसा माना जाता है कि शौरसेनी प्राकृत मथुरा या शूरसेन प्रदेश के आसपास बोली जाती थी। मध्यदेश की बोली से विकसित होने के कारण साहित्य के क्षेत्र में इसे अधिक मान्यता प्राप्त हुई, और इसीलिए यह संस्कृत से अधिक प्रभावित भी है। संस्कृत के नाटक में स्त्री आदि पात्रों की भाषा के रूप में मुख्य रूप से शौरसेनी प्राकृत का ही प्रयोग मिलता है। दिगम्बर जैन सम्प्रदाय का धार्मिक साहित्य भी इसी प्राकृत में मिलता है।

2½ ***iS'kkph ¾*** महाभारत में पिशाच जाति का उल्लेख है जो भारत के उत्तर–पश्चिम में बसी थी। इसका स्थान आज के कश्मीर के आसपास माना जा सकता है। पैशाची प्राकृत पिशाच जाति की भाषा थी। यह उल्लेख किया जा चुका है कि कश्मीर भारत–ईरानी उपकुल की शाखा दरद भाषाओं का केन्द्र था, इसलिए पैशाची भाषा में दरद भाषा का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस भाषा में साहित्य उपलब्ध नहीं है। लेकिन यह भी माना जाता है कि इसमें विपुल साहित्य था, जो कि मूलतः पैशाची में था। लेकिन अब यह मूल रूप में उपलब्ध नहीं है, बल्कि संस्कृत में ही बृहत् कथा मंजरी, कथा सरित्सागर आदि के नाम से उपलब्ध है।

3½ ***egkjk"Vªh ¾*** इस प्राकृत का मूल स्थान महाराष्ट्र है लेकिन कुछ विद्वान इसे आजकल के महाराष्ट्र से न जोड़कर पूरे देश के संदर्भ में महाराष्ट्र यानी पूरे भारत की भाषा मानते हैं। यही कारण है कि कुछ विद्वान इसे शौरसेनी के निकट की भाषा मानते हैं। तथ्य चाहे जो भी हो महाराष्ट्री प्राकृत एक प्रमुख शाखा थी और उसमें विपुल साहित्य रचना मिलती है। गाथा सप्तशती (गाहा सत्तसई) इसकी प्रमुख रचना है। कालिदास, हर्ष आदि ने अपने नाटकों में इसी भाषा का उपयोग किया। जैनियों ने इसमें धार्मिक ग्रंथ गद्य में लिखे हैं जिस कारण उनकी भाषा को जैन महाराष्ट्री भी कहा जाता है।

4½ ***v/kZekx/kh ¾*** जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस भाषा का क्षेत्र शौरसेनी और मागधी के बीच में है। इसलिए वह आधी मागधी है। यानी हम कह सकते हैं कि यह प्राचीन कोसल के आसपास की भाषा है। जैनियों ने इस भाषा का प्रयोग साहित्य रचना के लिए किया।

5½ ***ekx/kh ¾*** जैसे कि नाम से स्पष्ट है कि यह मगध की भाषा है। इसी को गौड़ी भी कहते हैं। इस भाषा में अधिक साहित्य रचना नहीं मिलती।

इनके अलावा और कुछ प्राकृत भाषाएँ भी मिलती हैं जो बहुत समृद्ध या महत्वपूर्ण नहीं हैं।

7-4-2 çkÑr Hkk"kkvksa dh lkekU; fo'ks"krk,¡

हमने ऊपर उल्लेख किया था कि हमारे सामने पाँच प्राकृत भाषाएँ हैं। इन सबकी अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं। इस संबंध में आप आगे अध्ययन कर सकते हैं। यहाँ हम प्राकृत भाषाओं की मूलभूत विशेषताओं की चर्चा करेंगे, जिससे आप आधुनिक भाषाओं के विकास क्रम को समझ सकेंगे। इस भाग को पढ़ने से पहले आप पालि भाषा की विशेषताओं को एक बार फिर देख लें, जिससे आगे के विकास की गति को जान सकें।

/ofu Loj

i) शब्दांत महाप्राण व्यंजन /ह/ में बदल गये। जैसे मेहो (मेघ), मुंह (मुखम्)।

ii) /न/ का विकास /ण/ में हुआ। णअंर, (नगरम्)।

iii) शब्द मध्य के व्यंजन लुप्त हुए। कअं (कृतम्), करते क्रिया मओ/मृत/, राआ/राजा/आदि। कहीं /य/ श्रुति की भी प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है जैसे ''मृगांक'' से ''मयंक''।

0;kdj.kd Lrj

i) प्राकृत में पालि की तुलना में संज्ञा शब्दों के रूप कम हो गये। संस्कृत के 24 रूपों की तुलना में पालि में 14 रूप रहे और द्विवचन के आठ रूप खत्म हो गये। प्राकृत में 12 रूप रहे।

ii) संस्कृत में हर क्रिया धातु के एक लकार में 9 रूप बनते थे और विभिन्न लकारों में 90 रूप बनते थे। पालि में 240 रूप रह गये और प्राकृत में इनकी संख्या घटकर 72 हो गयी।

7-5 viHkza'k

अपभ्रंश भाषा (या भाषाओं) का समय 500ई. से 1000 ई. तक माना जाता है, जबकि 15वीं शताब्दी तक इसमें साहित्य रचना होती रही है। अपभ्रंश शब्द का अर्थ आमतौर पर विद्वान ''अपभ्रष्ट'' या ''बिगड़ी हुई'' भाषा लेते हैं। इस भाषा के निम्नलिखित नाम भी है – ''अवब्भंस'' अवहंस, अवहट्ठ (अपभ्रष्ट), अवहट, अवहत्थ आदि। यह बोलचाल की भाषा यानी देश भाषा थी। 14वीं शताब्दी के कवि विद्यापति लिखते हैं – nfly c;uk lctu feV~BkA rs rSlu tEi´kS vogV~Bk (अर्थात् देश की भाषा सब लोगों के लिए मीठी है। इसे अवहट्ठ कहा जाता है)।

7-5-1 viHkza'k lkfgR;

अपभ्रंश का साहित्य विविध प्रकार का है। इसकी प्रमुख धाराएँ निम्न प्रकार की हैं – i) पुराण साहित्यः अपभ्रंश में प्रमुख रूप से जैनियों के पुराण लिखे गये जिनमें प्रमुख हैं पुष्पदंत का महापुराण और शालिभद्र सूरि का बाहुबलि रास। अपभ्रंश के राम काव्य के कवि स्वयंभू ने पउम चरिउ (पद्म चरित यानी राम काव्य) की रचना की। ii) चरित काव्य : चरित्र काव्य लोकप्रिय व्यक्तियों के जीवन चरित्र हैं। पुष्पदंत के णायकुमार चरिउ (नागकुमार चरित) जसहर चरिउ आदि प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। iii) कथा काव्य : ये आदि काल के महाकाव्यों की तरह काल्पनिक कथा कृतियाँ हैं। iv) जैन कवियों का नीतिपरक साहित्य : ये अधिक मुक्तक रचनाएँ हैं, जिनमें जीवन के आदर्शों का विवरण है। जोइन्दु को ''परमात्मा प्रकाश'' और ''योग स्तर'' और रामसिंह का ''पाहुड दोहा''

प्रमुख कृतियाँ हैं। v) बौद्ध सिद्ध कवियों ने रहस्य साधना संबंधी अपनी काव्य रचना अपभ्रंश में ही की। इस धारा में सरहपा और कण्हपा के दोहा कोष प्रसिद्ध हैं।
vi) आदिकालीन रचनाएँः हम जिसे हिंदी साहित्य का आदिकाव्य कहते हैं उसकी कई रचनाएँ अपभ्रंश में हुई हैं। काव्य कृतियों में ''रासो'' साहित्य आदिकाल की प्रमुख रचनाएँ हैं। उनमें अब्दुल रहमान की कृति संदेश रासक अपभ्रंश में लिखी गयी है।

अपभ्रंश के कितने रूप हैं? विद्वानों में इस संबंध में मतभेद हैं। कुछ विद्वान अपभ्रंश के दो रूप मानते हैं – पश्चिमी और पूर्वी। अब सर्वमान्य विचार छह रूपों का है। ये हैं – शौरसेनी, पैशाची, ब्राचड, महाराष्ट्री, मागधी और अर्ध मागधी। माना यह जाता है कि इन्हीं क्षेत्रीय रूपों से विविध आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ।

7-5-2 viHkza'k Hkk"kk dh fo'ks"krk,¡

/ofu Lrj

ध्वनि स्तर पर इसकी तीन–चार विशेषताएँ हैं, जो आधुनिक हिंदी और उसकी बोलियों के स्वरूप को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

i) स्वरों का दीर्घीकरण हुआ जैसे अक्खि से आखि। हिंदी में आँख आदि शब्दों का रूप इसी से विकसित हुआ।

ii) अनुनासिकता का विकास इसी युग में हुआ, जैसे बक्र से बंक (और आधुनिक हिंदी में बाँका)।

iii) शब्द उकार बहुल थे याने /उ/ से समाप्त होते थे जैसे चरिउ (चरित), बहुतु (बहुत)। आधुनिक हिंदी में शब्दांत स्वर समाप्त हो गये।

0;kdjf.kd Lrj

i) संस्कृत शब्दों के संज्ञा रूप 24 थे, जो पालि में 14 बने, प्राकृत में 12 ओर अपभ्रंश तक आते–आते सिर्फ़ 6 ही रह गये। उदाहरण के लिए पुत्त (पुत्र) शब्द लीजिए। इसके रूप यों है –

dkjd	,dopu	cgopu
कर्ता/कर्म/संबोधन	पुत्त/पुत्ता/पुत्तु	पुत्तु/पुत्ता
करण/अधिकरण	पुत्ते/पुत्ति	पुत्तहिं
संप्रदान/अपादान/संबंध	पुत्तस्स/पुत्तहु	पुत्ताणं/पुत्ताहं

ii) संज्ञा के कारक रूप कम होने के कारण विभक्ति के अर्थ को प्रकट करने के लिए परसर्ग शब्दों का प्रयोग बढ़ा। ये परसर्ग हैं – केर/कर कर का (मज्झे, मांझ, माँह, महँ) में, (उप्परि। परि) पर, तैं/तें ते (से) काँ/कौ/कूँ (को) आदि।

iii) क्रिया रूपों में भी इसी प्रकार का सरलीकरण दिखायी पड़ता है। संस्कृत में धातु के रूप विभिन्न लकारों में 540 होते थे, पालि में 240 रह गये और प्राकृत में 72। आप जानते हैं कि ये रूप हिंदी में कितने हैं? हिंदी में भूतकाल (आया आदि 4) वर्तमान काल (आता आदि 4) भविष्यत् (आएगा आदि 12) संभावनार्थ (आऊँ, आए आदि 6) और विधि (आओ आदि 2) में कुल 28 क्रिया रूप हैं। भूतकाल में 4 रूप हैं और भविष्यत् में 12, इसका कारण यह है कि भूतकाल के कृदंत में पुरूष का अंतर नहीं

है। आया, आता आदि कृदंत सिर्फ़ लिंग और वचन भेद बताते हैं। पुरूष की सूचना सहायक क्रिया (है, हो, हूँ आदि) के आधार पर मिलती है। भविष्यत् में पुरूष की भी सूचना है, यह एकल क्रिया है याने क्रिया का तिडन्त रूप है। कृदंत के कारण आया है आदि संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं। एकल क्रिया से संयुक्त क्रिया का विकास अपभ्रंश से ही शुरू होता है। कृदंत तभी प्रभावी होते हैं, जब धातु रूप निश्चित हो जाएँ। जैसे हिंदी में

आ	या (भूतकालिक कृदंत)
जा	ता (वर्तमानकालिक कृदंत)
देख	(गया, क्रिया आदि अपवादों को छोड़कर)

अपभ्रंश में धातु रूप निश्चित हो गये और उनसे विभिन्न क्रिया रूपों की रचना व्यवस्थित होने लगी। इस दृष्टि से अपभ्रंश का रूप–रचना की दृष्टि से आधुनिक आर्य भाषाओं से सीधा संबंध है।

iv) जब शब्दों में विभक्ति आदि युक्त संश्लिष्ट रूप न बनें तो भाषा में पदक्रम अधिक निश्चित हो जाता है। जैसे ''राम खाना खा रहा है'' को ''खाना राम खा रहा है'' नहीं कह सकते। अपभ्रंश में आधुनिक भाषाओं की तरह पदक्रम आधिक सुनिश्चित हो गया था।

ck/k ç'u 2

3) हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए।

i) हिंदी साहित्य के आदिकाल में भी अपभ्रंश में साहित्य रचा गया था।

ii) विद्वान पाँच प्राकृत भाषाओं का उल्लेख करते हैं।

iii) कवि कालिदास ने प्राकृत में नाटक रचना की थी।

iv) क्रिया रूपों की संख्या क्रमशः संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश में कम होती गयी।

v) अपभ्रंश भी संस्कृत की तरह संयोगात्मक भाषा है।

4) उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें।

i) अपभ्रंश को..... भी कहा जाता है। (अवहट्ठा/शौरसेनी)

ii) अपभ्रंश में आधुनिक आर्य भाषाओं की ये तीन विशेषताएँ मिलती हैं –

क) ..... ख) ..... ग) .....

iii) विद्वान प्राकृत की ..... और अपभ्रंश की..... बोलियाँ मानते हैं।

iv) अपभ्रंश में लिखा गया प्रमुख रासो ग्रंथ है.....।

v) जहाँ संस्कृत में संज्ञा शब्द के ..... रूप बनते थे, अपभ्रंश में ये ..... ही रह गये।

5) अपभ्रंश साहित्य पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7-6 vk;qfud Hkk"kkvksa dk fodkl Øe

अपभ्रंश भाषाओं की समाप्ति के बाद लगभग 1000ई. से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास शुरू होता है। लेकिन यह विकास क्रम स्पष्ट रूप में हमारे सामने नहीं आता, क्योंकि तत्कालीन साहित्य का लिखित रूप हमारे सामने नहीं है। भाषाओं के विकास को हम व्याकरण ग्रंथों से देख सकते हैं। लेकिन इस युग की भाषाओं का व्याकरण भी लिखा नहीं गया होगा। इसकी तुलना में प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में उपलब्ध साहित्य सुरक्षित हैं और इनमें व्याकरण भी लिखे गये थे, जो आज भी उपलब्ध हैं।

दूसरी तरफ़ यह कहना कठिन हो सकता है कि अपभ्रंश का बोलचाल की भाषा या जनभाषा के रूप में कब तक प्रयोग होता रहा। संभव है कि अपभ्रंशों और आधुनिक आर्य भाषाओं के संक्रांति काल में दोनों का कुछ दिन प्रयोग होता रहा हो। बोलचाल की भाषा के रूप में अपभ्रंश के समाप्त होने के बाद भी इसमें साहित्य रचना होती रही। हिंदी साहित्य के आदि काल में लगभग 14वीं सदी तक पुरानी हिंदी और अपभ्रंश दोनों में हमें साहित्य मिलता है।

7-7 lkjka'k

इस इकाई में हमने संस्कृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच भाषा के परिवर्तनों को क्रमशः पालि, प्राकृत ओर अपभ्रंश में देखा। संस्कृत संश्लिष्ट भाषा थी। इसमें संज्ञा के कई रूप थे, जो तीनों लिंगों में अलग–अलग धातु रूपों में वर्गीकृत थे। हर धातु शब्द के आठ कारकों में चौबीस रूप बनते थे। हिंदी में दो लिंगों में सिर्फ़ 5–6 प्रकार के संज्ञा शब्द हैं और हर संज्ञा शब्द के सिर्फ़ 6 रूप बनते हें। उसी तरह क्रिया में सैकड़ों धातु रूप थे और हर धातु के 540 क्रिया रूप बनते थे। हिंदी में क्रिया धातु सिर्फ 5–6 ही प्रकार के हैं और हर क्रिया धातु से सिर्फ़ 25–30 रूप बनते हैं। सरलीकरण के इस

इतिहास को हमने पालि प्राकृत और अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं के संदर्भ में देखा।

पालि में द्विवचन समाप्त हो गया और अपभ्रंश तक आते–आते नपुंसकलिंग भी समाप्त होने लगा। पालि और प्राकृत में संज्ञा तथा क्रिया के रूप संस्कृत के अनुसार थे। अपभ्रंश में संज्ञाओं में परसर्ग चिह्न जोड़ने की प्रवृत्ति पैदा हुई। इसी तरह क्रियाओं का सरलीकरण हुआ और कृदंत रूपों में सहायक क्रिया जोड़कर क्रिया बनाने का प्रारंभ हुआ। इस तरह संस्कृत की संयोगात्मकता से आधुनिक आर्य भाषाओं की वियोगात्मकता तक की यात्रा इन भाषाओं के विकास क्रम को दर्शाती है। इस दृष्टि से अपभ्रंश आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के अधिक निकट है।

ध्वनि परिवर्तन के क्रम के आधार पर हम आधुनिक आर्य भाषाओं के तद्भव शब्दों की ध्वनि संरचना को समझ सकते हैं।

चूंकि इन भाषाओं का क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिलता और आधुनिक भारतीय भाषाओं के आरंभिक स्वरूप का हमारे सामने लिपिबद्ध ब्यौरा नहीं है, यह बताना कठिन है कि अपभ्रंश से आगे का विकास क्रम क्या रहा। हम सिर्फ़ अनुमान कर सकते हैं कि भिन्न–भिन्न अपभ्रंशों से भिन्न–भिन्न उपभ्रंशों से भिन्न–भिन्न भाषाओं का विकास हुआ।

7-8 ck/k ç'uk d mRrj

ck/k ç'u 1

1) i) गलत ii) सही iii) गलत iv) गलत v) सही

2) i) सादृश्य ii) वचन iii) अशोक के शिलालेखों iv) संस्कृत

v) स्थानीय रूप

ck/k ç'u 2

3) i) हाँ ii) हाँ iii) नहीं iv) हाँ v) नहीं

4) i) अवहट्ठ ii) क) परसर्ग ख) संयुक्त क्रिया ग) निश्चित पदक्रम

iii) 5.6 iv) संदेश रासक v) 24

5) अपने उत्तर में अ) जैन काव्य आ) बौद्ध सिद्धों का काव्य, और इ) रासो काव्य की चर्चा करें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY